सफलता की कहानी 2

मुर्गी पालन से दिव्यांगो का सशक्तिकरण

जिज्ञासा दिव्यांग समूह

पता– ग्राम कोनारी , विकासखण्ड –पलारी,जिला– बलौदाबाजार–भाटापारा (छ.ग.)

छ.ग. सामाजिक सामावेशी परियोजना अंतर्गत बेस लाईन सर्वेक्षण के बाद बलौदा बाजार जिला में दिव्यांग समूह गठन किया गया आजिविका कार्य करने को इच्छुक दिव्यांग समुह को गृहिणी संस्था, साईट सेवर्स और प ुपालन विभाग के द्वारा मुर्गी पालन पर प्र िक्षण दिया गया एवं दिव्यांग समूहो को आजिविका के प्रति ध्यानाकर्शण के लिए भौक्षणिक भ्रमण के लिए दो बार द गोट ट्रस्ट लखनाउ भी भेजा गया वहॉ से दिव्यांगो ने मुर्गी पालन प्र िक्षण लिया तथा संस्था ने प ुपालन विभाग बलौदाबाजार से मिलकर प्र िक्षण कार्यक्रम आयोजन किया प ुपालन विभाग ने राज्य के जलवायु के अनुसार मुर्गी पालन की जानकारी दिया प्र िक्षित दिव्यांग समूह जो निम्न है– विकासखंण्ड बलौदाबाजार प्रेरणा दिव्यांग समूह खपरी, दिव्यांग जनकल्याण दिव्यांग समूह डमरू, विकासखंण्ड सिमगा दुर्गा दिव्यांग समूह बुडगहन,प्रगति दिव्यांग समूह बुडगहन, हरियाली दिव्यांग समूह बिटकुली, जय अम्बे मॉ दिव्यांग समूह बिटकुली, विकासखंण्ड पलारी एकता दिव्यांग समूह रसौटा, जीवनधारा दिव्यांग समूह साराडीह, ममता दिव्यांग समूह गातापार, मॉ रणबौर दिव्यांग समूह गातापार दिव्यांग समूह द्वारा मुर्गी पालन के संबंध में घर के पिछवाड़े में सामूहिक रूप में उन्नत किस्म के मुर्गी का पालन कर मॉस व अण्डा उत्पादन करना तथा मुर्गी व बच्चे का रखरखाव कर उनके आहार की जानकारी दी गई। वर्श 2018 में पशुपालन विभाग बलौदाबाजार के द्वारा दो दिव्यांग समूह के सदस्य को जिसमें पलारी ब्लाक के ग्राम कोनारी से जिज्ञासा दिव्यांग समूह एवं ग्राम मल्लिन संस्कार दिव्यांग समूह को चुजा दिया गया। लेकिन ग्राम में सामाजिक दबाव होने के कारण ग्राम मल्लिन संस्कार दिव्यांग समूह ने प्राप्त चुजा को कोनारी समूह को पालन हेतु दे दिया।

वर्तमान में ग्राम कोनारी के जिज्ञासा दिव्यांग समूह सदस्य साथ में मिलकर सामूहिक व्यवसास कर रही है समूह का गठन वर्ष 2016 में तीन महिला और पांच पुरुषं कुल आठ सदस्य है। समूह का यह अनुभव साबित करता है कि कैसे दिव्यांग ने सरकार के मदद से खुद को गरीबी और निराशा को हराने के लिए संगठित होकर कार्य किया।बलौदाबाजार में उन्हें सब्सिडी में चूजों की अच्छी नस्लें भी प्राप्त हुआ हैं। उन्हें 2 यूनिट 90 चिक /300 प्रत्येक यूनिट मिलती है।

सफलता की कहानी 2

छः महीने के पालन–पोषण की अवधि के दौरान निन्यानबे प्रतिशत मुर्गी जीवित थे। अब वे मुर्गी 350 प्रति किलो की दर से बेचकर अब तक समूह ने 30,000 रुपये का लाभ कमाया है। जिज्ञासा दिव्यांग समूह सदस्यों ने कहा कि स्वयं सहायता समूहों का प्राथमिक उद्देश्य दिव्यांग ता के साथ सामाजिक–आर्थिक स्थिति सुधार करना है, विशेषकर उनकी आय में वृद्धि करना। गृहिणी के कार्यकर्ता के द्वारा समूह गठन की प्रक्रिया और समूह गठन से होने वाले लाभों के बारे में बताया गया। समूह के गठन के लिए उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति विकास करने के लिए उनकी रुचि को देखते हुए गृहिणी संस्था ने समूह के गठन में पहल की और उन्हें बैंक में खाता खोलने और उन्हें एनआरएलएम में पंजीकृत करने के लिए निर्देशित किया। सभी सदस्यों ने समूह की एक मासिक बैठक आयोजित करने का फैसला किया, और तय किया कि प्रत्येक सदस्य प्रति माह 100 रू की राशि जमा करेगा। मासिक बैठक में योगदान रा ि ा हर महीने बैंक में जमा होता है ताकि जरूरत पड़ने पर समूहों के सदस्य ऋण ले सकें। समूह के सदस्य मुख्य रूप से अगरबत्ती का विपणन करने में लगे हुए हैं, जो पास के अन्य दिव्यांगसमूह द्वारा निर्मित किया गया जा रहा था। समूह की सफलता ने जिले के अन्य समूहो को मुर्गी की उन्नत किस्म के साथ पिछवाड़े मुर्गी पालन की शुरुआत करने के लिए प्रेरित किया एवं समूह ने आने वाले वर्श में वृहत स्तर पर कार्य करने की कार्ययोजना बनाया है।

गृहिणी संस्था के द्वारा मार्च 2019 में भौक्षणिक भ्रमण आयोजित कर अन्य दिव्यांग समूह को मुर्गी पालन हेतु जागरूक कर प्रेरित किया।